षष्ठम अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

निष्कर्ष

शोध में सभी चरण महत्वपूर्ण होते हैं। निष्कर्ष सम्पूर्ण शोध कार्य को एक नई पहचान देता है। शोध का निष्कर्ष सुव्यवस्थित और क्रमबद्ध ढंग तथा तार्किकता से किया गया हो और शोध समस्या तथा उद्देश्य को समझ कर उसके विभिन्न तथ्यों को एकत्रित किया जाए एवं वर्गिकरण के बाद विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत शोध में शोध के अध्ययन के लिए कलाकारों का साक्षात्कार एवं दर्शकों से प्रश्नावली के माध्यम के से तथा विशेषज्ञों के साक्षात्कार को शामिल किया गया है। इन विधियों द्वारा आंकड़ों का संकलन किया गया है। आंकड़ों को विश्लेषित करने के पश्चात जो निष्कर्ष आया है उसका विश्लेषणात्मक परीक्षण किया गया है। उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर जो निष्कर्ष मिला वह निम्नलिखित है

- आंकड़ों के विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ है। सभी बहुरूपिया कलाकार जन्म से ही बहुरूपिया कला से जुड़े हुए थे। ज्यादातर कलाकार पारिवारिक परंपरा के कारण बहुरूपिया कला से जुड़े। जीवन यापन करने के लिए भी कलाकार आज वही इस कला से जुड़े हुए हैं।
- बहुरूपिया कला के पिछड़ने का सबसे बड़ा कारण सरकार की अनदेखी है। बहुरूपिया कलाकारों का अशिक्षित होना भी कला के पिछड़ने का मुख्य कारण है। कलाकार खुद को मुख्यधारा से नहीं जुड़ पाए।
- बहुरूपिया कला से आज भी बहुत से कलाकार जीवन यापन कर रहे हैं परंतु इस कला पर आश्रित कलाकारों के पास स्थाई रोजगार नहीं है। कभी कभी रूप सज्जा का भी खर्च नहीं निकल पाता है। लोग इस परंपरागत लोक कला को भूल रहे हैं। लोक कलाकारों को भिखारी समझते हैं कहते हैं कुछ काम धंधा करो।
- शोध के आंकड़े यह बताते हैं की बहुरूपिया कला को ज्यादातर दर्शकों ने पिछले छ: माह या फिर दो वर्ष पहले देखा है। इससे यह स्पष्ट है की यह कलाकार कला का प्रदर्शन सदैव नहीं करते हैं।
- आजादी के पहले इस कला को राजकीय संरक्षण प्राप्त था। आजादी से पहले बहुरूपिया कलाकार खानाबदोश थे परंतु अब स्थाई घरों मैं रहते हैं। आजादी से पहले बहुरूपिया कलाकार को राज्य की

ओर से जागीरें मिली हुई थी परंतु अब बहुरूपिया कलाकार यजमान से अनाज चून लेते हैं और खुद को उनका याचक बताते हैं।

- प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से यह भी पता चला की सरकारें जहां एक ओर सामाजिक और आर्थिक एवं धार्मिक आधार पर आरक्षण व अन्य सुविधाएं देती हैं। राजस्थान में ऐसी कोई योजना नहीं बनाई जिससे बहुरूपिया कलाकारों को लाभ हो।
- प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है की शिक्षा द्वारा इस कला का विकास एवं उत्थान किया जा सकता है।
- बहुरूपिया कला में संगीत, वाद्य यंत्रना होने से यह कला पिछड़ रही है। कलाकार गांव और यजमान के बीच ही रह गए हैं।
- बहुरूपिया कला में समय के मुताबिक बदलाव नहीं हुए। बहुरूपिया कला में आज भी महिलाओं का किरदार पुरुष द्वारा किया जाता है। बहुरूपिया कला में महिलाएं अभिनय नहीं कर सकती।
- बहुरूपिया कला का प्रदर्शन जो कलाकार आसपास करते हैं उन्हें कभी कोई समस्या नहीं हुई है। जो कलाकार दूरदराज के इलाकों में जाते हैं उन्हें पुलिस, प्रधान, सरपंच किसी एक की अनुमति लेनी होती है। सुरक्षा कारणों से कभी कभी अनुमति नहीं मिलती है।
- बहुरूपिया कलाकारों की बहुत सी समस्याएं हैं। राजस्थान में अभी तक बहुरूपिया कलाकारों का ना तो कोई संगठन है और ना ही कोई तय व्यक्ति जो कलाकारों की समस्याओं को आगे तक ले जा सके।
- प्राप्त आंकड़ों द्वारा यह भी ज्ञात हुआ की बहुरूपिया कला से स्थाई रोजगार ना होने के कारण बहुत से कलाकार कला को छोड़कर मजदूरी, ठठेरा जैसे कार्यों को करने लगे हैं।
- टेलीविजन के कार्यक्रम में एक समूह होता है जबकि बहुरूपिया कलाकार अकेला या चार से पांच लोगों के समूह में होता है। बहुरूपिया कलाकार को समाज का भी ध्यान रखना होता है टेलीविजन के कार्यक्रम में यह थोड़ा अलग है।
- प्राप्त आंकड़ों से यह भी ज्ञात हुआ की सरकार पंजीकृत बहुरूपिया कलाकारों को ही कला के प्रदर्शन का मौका देती है। यह सरकारी कार्यक्रम भी गिनती के दिन तक होते हैं।

- देश में विभिन्न राजनीतिक दल, पार्टी, एवं नेता समस्या को लोगों के सामने लाकर उनका हल करते व करवाते हैं। बहुरूपिया कला साथ ऐसा नहीं हुआ।
- प्राप्त आंकड़ों से यह ज्ञात हुआ की बहुरूपिया कलाकारों को देखकर लोगों के मन में आता है की कलाकार दयनीय स्थिति में जीवन जी रहे हैं। संवेदनशील मुद्दों को भी यह कलाकार हास्य के माध्यम से कहते हैं। बहुरूपिया कला की यह विशिष्ट संचार शैली। बहुरूपिया लोगों की बोली में बोलता है। टेलीविजन के कार्यक्रम में हिंदी भाषा का प्रयोग होता है।बहुरूपिया असली व टेलीविजन के कार्यक्रम नकली होते हैं।
- प्राप्त आंकड़ों से यह निष्कर्ष निकला की समय के साथ कला में थोड़ा बदलाव आया है कुछ कलाकार मनोरंजन के लिए फूहड़ शब्दों का प्रयोग करते हैं।
- कलाकारों को दी जानी वाली मानदेय राशि कम है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में लोग आज भी बहुरूपिया कलाकार का सम्मान करते हैं। इस कला को पाठ्यक्रम में जगह देनी चाहिए ताकी युवा भी कला को समझाएं।
- बहुरूपिया कलाकार अब आने वाले समय में अपने बच्चों को इस कला से नहीं जोड़ता चाहते हैं।
- ग्रामीण क्षेत्र में बहुत सी सूचनाओं व योजनाओं के लिए बहुरूपिया कला का सहारा लिया जाता है।

निष्कर्षत: देखा जाए तो यह परिणाम आया है कि मनोरंजन व ज्ञान के बहुत से साधन उपलब्ध होने के बाद भी लोक कलाओं का महत्व आज भी खत्म नहीं हुआ है। बहुरूपिया लोक कला के माध्यम से मनोरंजन के साथ लोगों को जागरूक भी किया जाता है। सरकार भी इन कलाकारों की मदद लेती है। लोगों को जागरूक करने व किसी सूचना के प्रचार-प्रसार के लिए। ग्रामीण क्षेत्रों के लोग आज भी बहुरूपिया कला को ज्यादा महत्व देते हैं।

सुझाव

वर्तमान समय में मीडिया की भूमिका व महत्व बहुत ज्यादा है। आज के दौर में न्यू मीडिया और इलेक्ट्रानिक मीडिया के साथ परम्परागत संचार माध्यम की भी भूमिका रही है। परम्परागत संचार के माध्यम आज 21वीं सदी में भी प्रभावशाली हैं एवं जनमानस पर इनके प्रभाव को इंकार नहीं किया जा सकता है। आज के युग में

भले ही हिंदी व अंग्रेजी को लेकर बड़ी योजनाए बन रही हैं भले ही देश सॉफ्टवेयर के विकास में एक अलग पहचान रखता है, स्मार्ट सिटी भी विकसित की जा रही हैं, पर इन सब के बीच भारत आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में ही बसता है। यह ग्रामीण लोगों के संचार का माध्यम उनकी बोली है। लोक कला में संचार बोलियों के माध्यम एवं आमलोगों द्वारा ही किया जाता है।

- सरकार को इस लोक कला के प्रचार व प्रसार के लिए नीतियां बनानी चाहिए। इस कला का भी प्रचार व प्रसार होना चाहिए। इस कला को विलुप्त होने से बचाया जाना चाहिए।
- सरकार को बहुरूपिया कला के संरक्षण के लिए सक्रिय हस्तक्षेप करना चाहिए। इसके लिए ऐसे परिवारों की आर्थिक मदद की जानी चाहिए जो सदियों से बहुरूपिया कला को सहेज कर जिन्दा रखे हुए हैं।
- बहुरूपिया कला को शैक्षणिक संस्थानों में पढ़ाया और सीखाया जाना चाहिए। इससे एक तरफ लोककलाकारों को काम मिलेगा और दूसरी तरफ युवा पीढ़ी को परंपरागत कलाओं को सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकेगा।
- सरकार को परंपरागत कलाओं को बचाने के लिए इनके विशेष आयोजन करने चाहिए और लोक कलाकारों को सुविधाएं मुहैया कर उनकी कलाओं को परिमार्जित करने में मदद करनी चाहिए।
- परंपरागत संचार और लोक माध्यमों के संरक्षण के लिए अधिकाधिक संग्रहालय बनाये जाने चाहिए। जहां न केवल दर्शकों के लिए लोक माध्यमों को देखने सुनने का मौका मिले, बल्कि लोक कलाकारों से भी मिलने का अवसर उपलब्ध हो सके।
- सरकार को बहुरूपिया लोक कला का विधिवत दस्तावेजीकरण (डॉक्यूमेंटेशन) करना चाहिए ताकि लुप्त होती कलाओं के कम-से-कम अवशेष तो बचाये जा सकें।
- कलाकार अब भावी पीढ़ी को इस कला से नहीं जोड़ता चाहते हैं। इसे रोकने के लिए कुछ नियम बनाए जाने चाहिए।कलाकारों की समस्याओं पर गम्भीरता से विचार करना चाहिए।